

## क्लेशों से तपता मानव

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आज लोगों में अनेक बिमारियां फैल रही है। भागदौड़ भरी जिन्दगी में शान्ति नहीं मिल रही है। मानव तनावग्रस्त है। तनाव से पीड़ित होने के कारण मानव की दुर्गति हो रही है। मानव क्लेशों से तप रहा है। मानव अप्राकृतिक हो गया है। प्राचीनकाल में मनुष्य के पास साधन नहीं थे फिर भी वह संतुष्ट था और प्रसन्नतापूर्वक रहता था। आज व्यक्ति ने अपनी आवश्यकताएं इतनी बढ़ा लीं हैं कि उसकी पूर्ति करने में वह रातों-दिन लगा रहता है। इसी के कारण उसे कष्टानुभूति होती है। आवश्यकताओं को सीमित करने से मानव प्रसन्नचित रह सकता है। आज समाज में असहनशीलता बढ़ रही है। परिवार, समाज हर जगह यह भाव दिखाई दे रहा है। व्यक्ति स्वकेन्द्रित और स्वार्थी हो गया है। अहंकार की भावना बढ़ रही है जिसके कारण कष्ट भी बढ़ रहा है। त्याग की भावना नष्ट होती जा रही है। मानव इतना स्वकेन्द्रित हो गया है कि वह केवल अपनी पत्नी और बच्चों को ही देखता है। परिवार के अन्य सदस्यों की क्या स्थिति है वह देखते हुए भी नहीं देखता। प्राचीनकाल में परिवार में समविभाग होता था। किन्तु आज यह नहीं हो रहा है। पहले व्यक्ति प्रधान था वहां धन कोई महत्व नहीं रखता था, किन्तु आज धन प्रधान हो गया है व्यक्ति गोण हो गया है। इसलिए धन कमाने की प्रतिस्पर्धा बढ़ गयी है जिससे तनाव भी बढ़ रहा है।

कष्टों को सहन करना, दुःखों को सहन करना, प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करना और परीषहों को सहन करना कष्ट सहिष्णुता है। सहनशीलता, समभाव, राग-द्वेष से मुक्ति और सभी प्राणियों के साथ आत्मवत दृष्टि रखना सद्गुण है। जब तक मानव में राग-द्वेष रहता है। तब तक वह मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकता है। यह जगत दो दृष्टियों से विचारणीय है— इन्द्रिय जगत, भीतर का जगत। इन्द्रिय जगत बाह्य जगत है, इसे लौकिक जगत कह सकते हैं। आन्तरिक जगत आध्यात्मिक जगत है, यही भीतर का जगत है। यदि कोई व्यक्ति कष्ट प्रदान करता है तो इसका प्रतिरोध कई प्रकार से किया जा सकता है। लेकिन सबसे अच्छा ढंग

सहनशीलता है। यदि प्रतिक्रिया की जाती है तो लड़ाई—झगड़ा होना निश्चित है। यदि परिस्थितियों को सह लिया जाता है तो टकराव टल जाता है। सहिष्णुता की पहचान यही है कि टकराव टालिए, टकराव विवाद को बढ़ाता है और सहिष्णुता मित्रता पैदा करती है। आज मानव की निगाहों में मानव का पतन हो चुका है। वह व्यक्ति को कीट पतंग से अधिक कुछ भी समझने के लिए तैयार नहीं। आत्मीयता जो मानव की एक विराट चेतना स्पन्दन है, आज लगभग जड़ बन चुकी है। यदि कुछ है तो वह कुछ इने गिने, पारिवारिक व्यक्तियों तक सीमित हो चुका है और उसके स्थान पर भयंकर घृणा का विष भर चुका है। घृणा के तपेदिक से पीड़ित मानव जीवन की जो आज स्थिति है वह किसी से छिपी हुई नहीं है। यह रोग आज घर में व्याप्त है। घृणा के ही प्रभाव से सत्य और न्याय की सरेआम हत्या होती है। सद्गुण की अवहेलना होती है और योग्य व्यक्ति का भी तिरष्कार होता है। इन्हें घर घर में फँलाना चाहिये— कोई छोटा नहीं, कोई तुच्छ नहीं, कोई पराया नहीं। अपनत्व और सम्मान का जितना अधिक विस्तार होगा, टकराव का विष उतना ही नष्ट होता हुआ चला चाएगा। सामाजिक संरचना के क्षेत्र में रचनात्मक कार्यक्रमों का सर्वाधिक महत्व है। समाज जो भी हो निश्चय ही वह जबर्दस्त शक्ति का भंडार होता है। शक्ति का व्यय नहीं करेगा तो व्यय होता सामर्थ्य गलत कार्यों की तरफ मुड़ जाएगा। समृद्धि का कारण मद्यपान, माँसाहार शिकार, जुआ, सट्टा, परस्त्री गमन आदि पापों का सामाजिक निषेध है। आज भी हम देखते हैं कि दो देशों के बीच कभी सीमा विवाद को लेकर कभी किसी आर्थिक मामलों को लेकर टकराव की स्थिति बन जाती है। अगर स्थिति का सही ढंग से निपटारा न हो पाया तो दो देशों के बीच युद्ध की संभावना प्रबल हो जाती है। भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो अपने पड़ोसी देशों के साथ मैत्री भाव और समता, सहअस्तित्व की नीति अपनाता है। टकराव को टालने का भरसक प्रयास करता है। यही कारण है कि आतंकवादी हमलों को झेलने के बावजूद भी सहनशीलता का परिचय देते हुए टकराव को टालता रहता है। सहनशीलता मानव का सबसे बड़ा गुण है। जिस मानव के अंदर यह गुण रहता है वह महान कहलाता है। जो व्यक्ति जितना सहन करके चलता है उसका चरित्र उतना ही ऊंचा होता है। चरित्र वह हीरा है जो टूटकर जुड़ता नहीं। चरित्र निर्माण मानव की स्वाधीन प्रक्रिया है। चरित्र ही ऐसा है जिसे मानव गढ़ सकता है। यह

उसके अपने अधिकार का विषय है। किसी व्यक्ति को किसी बुराई का परित्याग करने को कहा जाता है तो अक्सर उत्तर मिलता है कि क्या करूं मैं मानता हूं कि यह कार्य गलत है किंतु मेरी आदत पड़ गई है, आदत छूटना बड़ा कठिन है। सत्य और न्याय आत्म स्वीकृत तत्व हैं और उसके प्रत्येक स्फुरण में वे ही जगमगाते हैं। मानव जीवन समता और सहिष्णुता का जीवन है। भौतिक सुख-दुःख का मानव-जीवन में कोई स्थान नहीं। उसकी सम्पूर्ण चर्या आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण होती है। जिसने संयम के मार्ग को स्वीकार कर लिया है, उसके जीवन में कठोर और मृदु संवेदनों का आना आवश्यक है।